अध्याय–द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

2.0 भूमिका

2.1 पूर्व शोध कार्य का आकलन

2.1.1 एम.एड. छात्रों द्वारा किया गया अध्ययन कार्य

2.1.2 विद्वान व्यक्तियों के द्वारा किया गया । अध्ययन कार्य

अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.0 भूमिका–

ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिये आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को ज्ञान की सीमा कहा पर है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है। सत्त मानव प्रयासों से भूतकाल में एकत्रित ज्ञान का लाभ अनुसंधान में मिल सकता है। अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रस्तावित अध्ययन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संबंधित समस्याओं पर कार्य से बिना जोड़े, स्वतंत्ररूप से अनुसंधानकर्ता नहीं हो सकता।

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है। किसी भी क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान करना है तो उससे संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन करना अनिवार्य होता है। पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य नवीन समस्याओं का पता चलता है।

सामान्यरूप से बालक अनुभव निरीक्षण सोचकर और प्रायोगिक इन चारों प्रकार से सीखता है। कोई भी चीज सीखाते समय शिक्षककी अपनी एकमात्र परंरामगत पद्धति होती है। लेकिन बालक भिन्न–भिन्न शैलियों से सीखता है। जैसे कि भाषाविज्ञान में बालक को उच्चारण अवयवों के बारे में सीखाया जाता है तब कुछ बालक अनुभव से कुछ निरीक्षण से तो अन्य प्रायोगिक रूप से उसका उच्चारण करके अधिक अच्छी तरह से सीख सकता है।

अनुसंधान अध्ययन के लिये इसी विषय को चुनने के पीछे वैचारिक भूमिका वर्तमान समय में विद्यार्थियों को हो रही सीखने संबंधी समस्यायें

और उपलब्धियों पर होनेवाले प्रभाव को निराकरण लाना है। इस पद्धति से बालक को शिक्षा देने से वह सरलता से अध्ययन कर पायेगा। यह पद्धति बालक को सीखाने में अधिक मदद रूप हो सकती है।

सामन्य रूप से बालक बचपन से लेकर किशोरावस्था तक चार प्रकार के अधिगम कौशल को प्राप्त करता है। श्रवण, कथन कौशलो के द्वारा बालक अपने आसपास के वातावरण से परिचित एवं अनुकूलित होता है। इसके उपरांत अबतक विद्वानों के द्वारा किये गये अनुसंधानों के द्वारा अधिगम की भिन्न–भिन्न शैलियाँ बताई गई है।

- ग्रहण करके
- अनुभूति के द्वारा
- आभास के द्वारा
- देखकर
- नये अनुभवों के द्वारा
- प्रोत्साहित होकर
- थोड़े समय के लिये
- निष्पक्ष होकर
- जागृत होकर
- प्रश्न पूछकर
- अवलोकन के द्वारा
- अर्न्तमुखी होकर
- वर्गीकरण करके
- विश्लेषण करके

- चिन्तन–मनन करके
- मूल्यांकन करके
- तर्क करके
- अमूर्त कल्पना के द्वारा
- भविष्य को ध्यान में रखकर
- बुद्धि के द्वारा
- संकल्पना को समझकर
- प्रयोग करके
- स्वयं सीखकर
- सक्रिय होकर
- प्रयोजन के साथ
- उत्पादकता को ध्यान में रखकर
- उत्तरदायित्व के साथ
- वर्तमान की उपयोगिता को ध्यान में रखकर
- औचित्य को जानकर

उपरोक्त सभी अधिगम शैली के द्वारा बालक सीखते है। बालक अपनी प्रकृति के अनुसार अपनी अधिगम शैली को बनाता है। अधिगम शैली में मुख्यतः तीन तत्व संयुक्त होते हैं।

1. मनोवैज्ञानिक तत्व :–

इसे अनुप्रेरणा भी कहते है। सीखने वाले को अभिप्रेरणा के द्वारा ही उत्पन्न किया जाता है। अधिगम वह सहज प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य अपने पर्यावरण में प्रतिक्रिया करता है।

2. शारीरिक तत्व :–

हमारी प्रतिक्रिया हमारे ज्ञान ग्राहय तंतु श्रवण; दृष्टि आदि प्रभावकों की दशा और शरीर की सामान्य स्थिति पर निर्भर होती है।

3. वातावरण संबंधी तत्व :–

यह तत्व हमारे सम्मुख संपूर्ण वातावरण की अवस्था को प्रकट करता है। जो अधिगम क्रिया में सहायक होती है। इन्हीं तीनों तत्वों के सामंजस्य और सहयोग से व्यक्ति में अधगम शैली का निर्माण होता है।

प्रत्येक व्यक्ति जिस कार्य को सीखता है उसकी शैली अलग ही होती है ये शैलियाँ दो प्रकार की होती हैं–

अ. संबोधात्मक प्रवाह

ब. चयन कौशल

संबोधात्मक शैली में व्यक्ति के हल में विशिष्टता रहती है। इसमें शीघ्रता तथा विलम्ब भी निहित है जो व्यक्तिगत भिन्नता की ओर संकेत करते है। जेरोम ब्रुनर ने प्रत्ययों को सीखने के अनेक ढंग बताये हैं जिसमें से उपयुक्त का चुनाव करना पड़ता है। अतः हम कह सकते है कि अधिगम का अर्थ और प्रकृति में अवधाराणात्मक तथा व्याख्यात्मक अंतर आ गया है।

2.1 पूर्व शोधकार्य का आकलन –

अनुसंधान के क्षेत्र में पूर्व में अधिगम शैली विषय को समस्या बनाकर अनेक अनुसंधानकर्ता द्वारा इस विषय पर शोधकार्य किया है। उन शोधकार्यो को इस अध्याय में संबंधित साहित्य के रूप में लिया है।

समस्या के चयन के उपरांत संबंधित साहित्य का उपयोग करके अध्ययन से समस्या को अधिक स्पष्ट किया जाना आवश्यक है। बालक की

अधिगम शैली और उपलब्धियों पर विषद अनुसंधानकार्य किया गया है। डेबिड कोल्ब द्वारा किया गया अधिगम शैली अध्ययन इस अध्ययन की नींव है।

2.1.1 एम.एड. छात्रों के द्वारा किया गया अनुसंधान कार्य –

1. **शुक्ला अनामिका** "माध्यमिक स्तर के छात्रों की अधिगम शैली और उच्च एवं निम्न सफलता का अध्ययन" (1993/94) विषय पर कार्य किया। उनके मुख्य उद्देश्य उच्च एवं निम्न सफलता प्राप्ति में अधिगम शैली की भूमिका अहम् है।
2. **श्रीवास्तव प्रज्ञा** "कक्षा–5 के विद्यार्थियों की गणित विषयक उपलब्धि एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन" विषय पर कार्य किया। उनके मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया को जानना था।
3. **अमिता सिंह** "कक्षा–6 के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाईयों का अध्ययन एवं निराकरण" (1999) विषय पर कार्य किया। उनके मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की कठिनाईयों को जानकर उसका निराकरण करना है।
4. **बोटकुले उमेश** "कक्षा–6 के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उपलब्धि का अध्ययन" (2005) विषय पर कार्य किय। इन्होंने केवल एक विषय को ध्यान में रखकर उपलब्धियों का अध्ययन किया।

2.1.2 विद्वान व्यक्तियों द्वारा किया गया अनुसंधान कार्य –

शैली वातावरण, संवेग, शारीरिक एवं मनोशारीरिक घटको की वजह से अधिगमकर्ता को ज्ञान, समाज, कौशल तथा मूल्यों को सीखने में उपयोग होती है। अधिगम शैली पर कुछ शोधकर्ताओं ने अच्छा कार्य किया है। जो एनसायक्लोपिडिया ऑफ एज्युकेशनल रिसर्च तो कुछ शैक्षिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए है।

उनमें से विद्वान शोधकर्ताओं के द्वारा किये गये शोधकार्य जो मेरे शोधकार्य से संबंधित है उसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

1. **केइफे (Keefe)** 1979

ने अपने शोधकार्य में अधिगम शैली को व्याख्यायित करते हुए लिखा है कि अधिगम शैली पर ज्ञानात्मक, प्रेरणा और मनोवैज्ञानिक घटकों का सीखनेवालों की ग्रहण क्षमता तथा परिवेश से अनुकूलन का प्रभाव पड़ता है।

2. **डेविड हन्ट (David Hunt)** 1978

कौन सी स्थिति में विद्यार्थी सीखना पंसद करते है? इस प्रश्न को अधार बनाकर किये गये अध्ययन से निष्कर्ष निकाला गया जिसके अनुसार बालक परिस्थितियों के अनुसार अपने अधिगम स्तर को अनुकूल बनाता है।

3. **जोसेफ हिल (Joseph hill)** 1976

इन्हों ने अपने शोधकार्य में खोज किया कि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अधिगम शैली होती है। और वहीं उसको सीखने में मदद करती है।

4. **डेविड कोल्ब (David kolb)** 1978

डेविड कोल्ब ने अधिगम शैली को परिभाषित किया। उनके अनुसार आनुवंशिक वातावरण, पूर्व का अनुभव और वर्तमान की मांग ही अधिगम शैली है। कुछ लोग करके सीखते है, कुछ देखकर तो कुछ सोचकर सीखत है।

कोल्ब ने दो मुख्य चर बताये है। सीखते समय लोग इसीका अधिक उपयोग करते है।

5. डॉ.बेरनिक मेक केथी

ने अधिगम शैली को चार भागों में विभाजित किया है। सभी चारों शैली के चर के साथ संबंधित है।

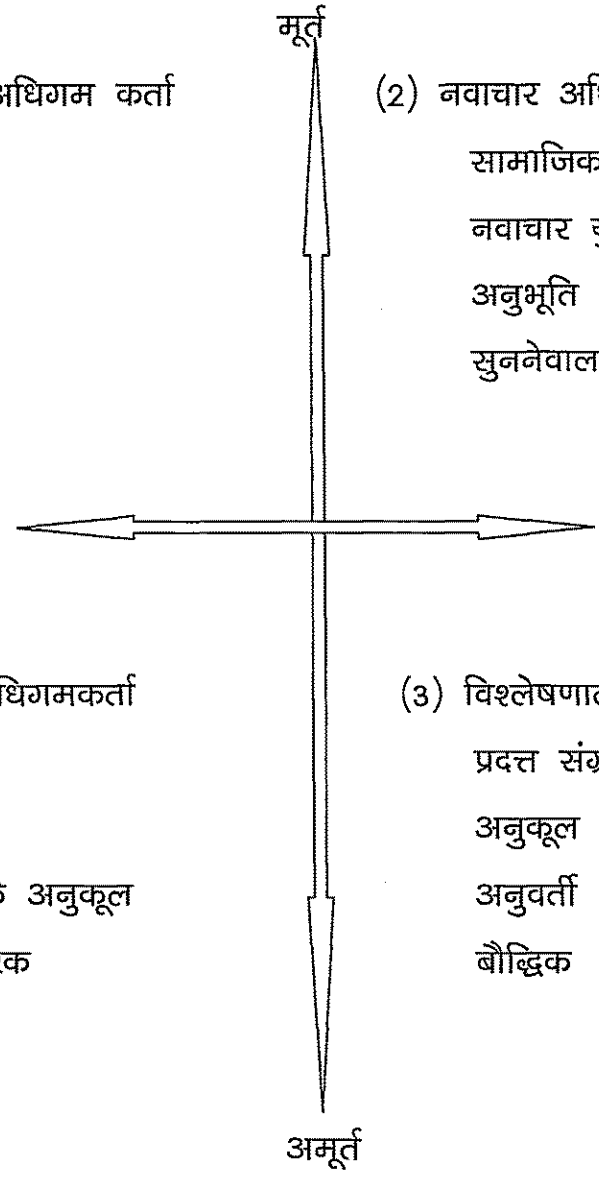

अतः बेरनिक ने अपने इस मोडेल में अधिगम शैली को चार भागों में विभाजित किया है। और संकल्पना को मूर्त, अमूर्त, देखना और करना इन चार भागों में बांटा है।

5. रूथ बेन्जवीं और अन्य (1979)

रूथ ने माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों के कौशल एवं निरीक्षण क्षेत्रों के बीच संबंध का अध्ययन किया था। इस अनुसंधान का मुख्य निष्कर्ष था। छात्रों की अपनी अधिगम शैली है अतः सीखते समय वह उसका प्रयोग कौशल के रूप में करते है।

6. लिन्च (Linch) (1981)

इन्होंने कक्षा–8वीं से कक्षा–10वीं के बच्चों की सोचने की शैली के बारे में शोधकार्य किया। उन्होनें पाया कि बच्चों की भागीदारी को महत्व देने से उनकी सोच में परिवर्तन आता है।

7. हार्वी (Harvy) (1963)

हार्वी ने अपने शोधकार्य में निष्कर्ष दिया कि वातावरण बालक की अधिगम शैली पर प्रभाव डालता है। ज्ञानात्मक प्रतिनिधित्व एक से एक संबंध को प्रेरित करते हुए अधिगम शैली प्रदान करते हैं।

8. कूप और सिंगल (1971)

ने ज्ञानात्मक शैली का प्रयोग किया और सिद्धांत दिया कि प्रत्येक व्यक्ति की अधिगम शैली भिन्न–भिन्न होती है तथा उसका आधार उसके व्यवहार पर रहता है।

9. कगन (1973/76)

ने ज्ञानात्मक अधिगम शैली के तीनों रूपों को जाँचा। प्रथम शैली कार्य करने की क्षमता को उजागर करती है। अन्य शैलीयों में प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्यक्षेत्र में स्वतंत्र रहकर अच्छा कार्य करता है।

अधिगम शैली पर अन्य अनुसंधान कगन और कोगन (1970) ज्ञानात्मक जटिलता संबंधी अनुसंधान–बेनिस्ट और मेर (1968) बेनिस्टर और फ्रन्चेला (1973) फिल्ड और बार (1974) चेन और गोदरी (1976) गिब्सन (1976) ने कार्य किया है